Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

प्राचीन भारतीय शिक्षा

उमेश चन्द्र मिश्र
प्रवक्ता(पी.जी.टी.)-संस्कृत
जे.बी.सी.+२ विद्यालय ,जामताड़ा
झारखंड

शोध आलेख सार– तत्कालीन एवं आधुनिक कालीन भारतीय समाज की तुलना करें तो बहुत अंतर आ चुका है। संयुक्त परिवार एकल परिवार की ओर शायद इसलिए बढ़ रहा है की आज वैसा संस्कार एवं शिक्षा लुप्तप्राय होती जा रही है एवं अत्यधिक तात्कालिक सुखाभिलाषा लोगों को अवसाद ग्रस्त कर दे रही है । शनैः शनैः पौर्वात्य सभ्यता पर पाश्चात्य सभ्यता निर्वाध गति से अपनी पकड़ मजबूत करती जा रही है। आज महाकवि कालिदास के समय की शिक्षा एवं संस्कारों को उनके काव्यों से लेने की आवश्यकता है,जिससे मानव समाज में हो रही विकृति को दूर किया जा सके और 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' को साकार कर सभी सामाजिक एकता के सूत्र में बंध सके।

मुख्य शब्द– आधुनिक कालीन, भारतीय, समाज, प्राचीन, साहित्य, शिक्षा।

भारत अपनी संस्कृति ,सभ्यता ,व्यवस्था एवं शिक्षा के लिए जाना जाता रहा है तथा इसी समावेशी सुचारू व्यवस्था को महाराजा मनु ने सुव्यवस्थित रूप दिया। आर्यभट्ट से लेकर भारद्वाज, चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, ब्रह्मगुप्त, नागार्जुन, बोधायन,पाणिनि माघ, भारवि, कालिदास, बाणभट्ट इत्यादि विद्वानों ने अपने – अपने स्तर से इस व्यवस्था में महनीय योगदान दिया।

साहित्य के क्षेत्र में अनेक उद्भट विद्वानों में महाकवि कालिदास अग्रगण्य कतार में शिरोमणि बने रहे। कविकुल शिरोमणि कालिदास का चाहे खण्डकाव्य हो, महाकाव्य हो या नाटक हो सभी में उनका अद्वितीय स्थान बना रहा। वैसे तो उनके सभी काव्य एक से बढ़कर एक है लेकिन अभिज्ञानशाकुन्तलम नाटक का अपना एक अलग स्थान है। उसमे भी चतुर्थ अंक के वे ४ श्लोक जो सर्वश्रेष्ठ श्लोको में गिने जाते है। उन्ही ४ श्लोकों में एक श्लोक में विदा होती पुत्री को पिता द्वारा दी गई शिक्षा तत्कालीन संस्कृति एवं सभ्यता की उत्तमोत्तम महनीयता को प्रकट कराती है जो निम्नांकित है

'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृताSपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः |

GISRRJ19248 | Received: 01 July 2019 | Accepted: 20 July 2019 | July-August-2019 [2 (4) : 28-30]

भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा: कुलस्याधयः||[1]

कवि कुल शिरोमणि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तल का शार्दूलविक्रीडित छन्द में रचित यह श्लोक ५७ ई॰ पू॰ की सर्वश्रेष्ठ सामाजित शिक्षा को प्रस्तुत करता है।

महर्षि कण्व अपनी पुत्री को पति गृह विदा करते समय ऐसी शिक्षा देते है जो वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को सिद्ध कर देती है।[2] महर्षि कण्व अपनी पुत्री शकुन्तला को कहते है 'गुरून् शुश्रूषस्व' अर्थात पति के घर जाकर अपने से बड़ों की सेवा करना। यहां यह बात स्मरण रखनी होगी की एक चक्रवर्ती सम्राट की रानी बनने वाली पुत्री को सेवा करने की शिक्षा दी जा रही है ,जो की तत्कालीन समाज को जोड़ कर चलने का उच्च आदर्श प्रस्तुत करता है।[3]

'सपत्नी जने प्रियसखीवृत्तिं कुरु' अपनी सपत्नीयो के साथ प्रिय सखी सा व्यवहार करना। इर्ष्या ,द्वेष ,अमर्ष इत्यादि से रहित प्रेम की यह शिक्षा उदात्तता की उपरि सीमा को प्रकट करता है।[4]

'विप्रकृता अपि रोषणतया भर्तु: प्रतीपं मा स्म गम:' महर्षि कण्व अपनी विदा होती पुत्री को कहते है कि तिरस्कृत होने पर भी क्रोध के आवेश में आकर पति के प्रतिकूल कार्य न करना। यहां भाव यह है कि कतिपय मतभिन्नता के चलते पति के अमर्ष युक्त वचनों पर प्रतिक्रिया कदापि नहीं करना| पुत्री को इस प्रकारकी शिक्षा पारिवारिक सामंजस्य एवं सयुक्त परिवार को एकता के सूत्र में बांधकर चलने की एक कड़ी के रूप में देखा जा सकता है ।[5]

'परिजने भूयिष्ठं दक्षिणा भव 'अर्थात अपने आश्रितों पर अत्यन्त उदार रहना। यह सामाजिक समभाव को प्रकट करता है क्योंकि एक चक्रवर्ती सम्राट की भार्या को अपने सेवको के साथ नम्र होकर व्यवहार करने तथा किये गये कार्य के बदले अधिकाधिक पारिश्रमिक के साथ उदारता को द्योतित करता है।[6]

'भाग्येषु अनुत्सेकिनी' अर्थात अपने ऐश्वर्य का अभिमान मत करना। यहाँ भाव है की चक्रवर्ती महाराज की महारानी होने का अहंकार कभी मत करना। इस श्लोक के पूर्व ही शारंगरव ने महर्षि कण्व के लिए कहा 'न खलु धीमतां कश्चित् विषयो नाम'इसका आशय यह है की विद्वानों के लिए कोई चीज अज्ञात नही होती। निश्चित रूप से महर्षि कण्व तपस्वी जीवन में भी गृहस्थ धर्म में क्या क्या विकार आ सकते है उसको वह अच्छी तरह से जानते थे। इन्ही सब कारणों से पुत्री को सचेत करते हुए शिक्षा दे रहे थे।[7]

'एवं युवतयः गृहिणी पदं यान्ति वामाः कुलस्य आधयः' अर्थात इस तरह का आचरण करने वाली स्त्रियाँ गृह लक्ष्मी के पद पर अधिष्ठित होती है और इसके विपरीत चलने वाली कुल के लिए अभिशाप होती है।[8]

इस प्रकार तत्कालीन एवं आधुनिक कालीन भारतीय समाज की तुलना करें तो बहुत अंतर आ चुका है। संयुक्त परिवार एकल परिवार की ओर शायद इसलिए बढ़ रहा है की आज वैसा संस्कार एवं शिक्षा लुप्तप्राय होती जा रही है एवं अत्यधिक तात्कालिक सुखाभिलाषा लोगों को अवसाद ग्रस्त कर दे रही है। शनैः शनैः पौर्वात्य सभ्यता पर पाश्चात्य सभ्यता निर्वाध गति से अपनी पकड़ मजबूत करती जा रही है। आज महाकवि कालिदास के समय की शिक्षा एवं संस्कारों को उनके काव्यों से लेने की आवश्यकता है,जिससे मानव समाज में हो रही विकृति को दूर किया जा सके और ‘सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय’ को साकार कर सभी सामाजिक एकता के सूत्र में बंध सके।

सन्दर्भ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला
2. प्राचीन भारतीय संस्कृत– डॉ.विरेन्द्र कुमार सिंह
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ.कपिल देव द्विवेदी
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – डॉ.कपिल देव द्विवेदी
5. मेघदूतम्– श्री तारिणीश झा
6. रघुवंशम्– डॉ श्री कृष्णमणि त्रिपाठी
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– सुबोधचन्द्र पंत
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय